ए रामतना रस कहूं केटला, थाय निरतना रंग।
हस्त चरणनां भूखण सर्वे, बोले बंनेना एक बंग।। ६ ।।

इस रामत का आनन्द कितना कहूं? इसमें हाथ के, पैर के, सभी आभूषण एक साथ ऐसे बोलते हैं, जैसे नृत्य हो रहा हो।

लटके गाए ने लटके नाचे, लटके मोडे अंग।
लटके रामत रेहेस लटके, लटके सांईं लिए संग।। ७ ।।

लटक के साथ में गाएंगे। लटकते हुए नाचेंगे। लचकाते हुए अंग को मोड़ेंगे। इस खेल के भाव को लटक से ही दिखाएंगे तथा लटक से ही वालाजी के साथ खेलेंगे।

मारा वालाजीमां एक गुण दीसे, जाणे रामत सीख्या सहु पेहेली।
इंद्रावतीमां बे गुण दीसे, एक चतुर ने रमता गेहेली।। ८ ।।

वालाजी में एक गुण दिखाई देता है कि वह पहली बार में ही सीखकर रामत खेल लेते हैं। श्री इन्द्रावतीजी में दो गुण दिखाई देते हैं—एक तो वह चतुर हैं, दूसरी वह मदभरी मस्ती में खेलती हैं।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ ५४९ ॥

राग कालेरो

आवो वाला रामत रासनी कीजे, आपण कंठडे बांहोंडी कां न लीजे रे॥ टेक ॥ १ ॥

हे वालाजी! आओ, हम रास की रामत खेलें अपन एक-दूसरे के गले में बाहें क्यों न डालकर खेलें?

आ वेख केम करी ल्याव्या रे वालैया, अमने थयो अति मोह रे।
खिण एक अमथी अलगां म थाजो, अमे नहीं खमाय विछोह रे।। २ ।।

हे वालाजी! आपने ऐसा मनमोहक भेष कैसे धारण किया? हम देखकर मोहित हो रहे हैं, इसलिए अब आप एक पल के लिए भी जुदा नहीं होना, वरना हम से वियोग सहन नहीं होगा।

आ वेख अमने वालो घणु लागे, वेख रसाल अति रंग।
द्रष्ट थकी अलगां म थाजो, दीठडे ठरे सर्वा अंग।। ३ ।।

आपका यह भेष हमें बड़ा प्यारा लगता है। भेष रस भरा है। इसे देखकर सब अंग तृप्त होते हैं। इसलिए आप हमारी आंखों से ओझल नहीं होना।

आ वेख अमने गमे रे वालैया, लीधो कोई मोहन वेल रे।
नेंणे पल न आवे रे वालैया, रूप दीसे रंग रेल रे।। ४ ।।

हे वालाजी! आपने एक मोहिनी बेल की तरह जो भेष धारण किया है, वह हमें बड़ा अच्छा लग रहा है। इसे देखकर हमसे पलक भी नहीं झपकी जाती। आपका रूप आनन्द से भरपूर दीखता है।

रामत करतां रंग सहु कीजे, खिण खिण आलिंघण लीजे रे।
अधुर तणो जो रस तमे पीओ, तो अमारा मन रीझे रे।। ५ ।।

खेलने में सब प्रकार के आनन्द के साथ पल-पल में लिपटते रहें। हमारे अधरों का रस आप पिएं तो हमारा मन आप पर रीझ जाए।

Nijanand App

उलट अंग न माय रे वालैया, कीजे रंग रसाल रे।
पल एक अमथी म थाओ जुआ, रखे कंठ बांहोडी टाल रे।। ६ ।।

हे वालाजी! हमारे अंग में खुशी समाती नहीं है। आप आनन्द कीजिए तथा एक क्षण के लिए भी हमसे अलग न हों और न हमारे गले से अपनी बांह ही हटाएं।

तम सामूं अमें ज्यारे जोइए, त्यारे जोर करे मकरंद रे।
बाथो बथिया लीजे रे वालैया, एम थाय आनंद रे।।७ ।।

हे वालाजी! जब मैं आपको देखती हूं तो मुझे काम सताता है, इसलिए आप मुझे अपने साथ चिपटा लें तो अधिक आनन्द होगा।

रामत करतां आलिंघण लीजे, ए पण मोटो रंग रे।
साथ देखतां अमृत पीजे, एम थाय उछरंग रे।। ८ ।।

खेल में लिपटाने पर अधिक आनन्द आता है। सबके सामने जब आप अधरों का रस पिएंगे तो बेहद खुशी होगी।

आलिंघण लेता अमृत पीतां, विनोद कीधां घणां हांस रे।
कठण भीडाभीड न कीजे रे वालैया, मुंझाय अमारा स्वांस रे।। ९ ।।

वालाजी लिपटाते हैं। अधरों का अमृत पीते हैं। विनोद करते हैं और हंसी करते हैं। हे वालाजी! आप जोर से न दबाएं हमारी सांस इससे रुकती है।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ ५५८ ॥

छंदनी चाल

सखी एक भांत रे, मारो वालोजी करे छे वात रे।
लई गले बाथ रे, आंणी अंग पासरे, चुमन दिए चितसूं।। १ ।।

हे सखी! वालाजी एक निराले ढंग से बात करते हैं। पास में आकर गले से चिपटा लेते हैं और चुम्बन लेते हैं।

मारा वाला मांहें कल रे, अंगे अति बल रे।
रमे घणे बल, रंग अविचल, वल्लभ अति वितसूं।। २ ।।

हमारे वालाजी में एक विचित्र युक्ति है। अंग शक्ति से भरपूर हैं। ताकत से खेलते हैं। मस्ती अमिट है। यह इन सब गुणों की खान हैं।

आ जुओ तमे स्याम, करे केवा काम।
भाजे भूसी हाम, राखे नहीं माम, हरवे घणे हितसूं।। ३ ।।

हमारे वालाजी को देखो। कैसा काम करते हैं। हमारी चाहना पूर्ण करते हैं। कोई कमी नहीं रखते। तुरन्त ही भलाई की बात करते हैं।

मारा वालासुं विलास, स्यामा करे हांस।
सूधो रंग पास, करी विस्वास, जुओ जोपे खंतसूं।। ४ ।।

हमारे वालाजी से श्यामा महारानी हंसी और विलास करती हैं। उनमें दृढ़ विश्वास है और वह मस्ती से भरी हैं। उनको तुम ध्यान से देखो।

Nijanand App